उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: S82 /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 10–08–2023

दिनांक	:	10 अगस्त, 2023
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की नवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की नवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 10 अगस्त, 2023 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ; कृषि विभाग; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग; रेशम विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान आगामी सप्ताह एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार आगामी सप्ताह (10 से 16 अगस्त, 2023) के दौरान प्रभावी वर्षा प्रदेश के उत्तरी तराई एवं उससे लगे क्षेत्रों तक सीमित रहने की संभावना के तहत पूर्वी उत्तर प्रदेश में कुछ स्थानों जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं–कहीं वर्षा होने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश के तराई जनपदों में मेघ गर्जन एवं वज्रपात के साथ कहीं कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के सभी अंचलों में हल्के से मध्यम बादलों के छाये रहने के कारण औसत तापमान सामान्य के आस–पास ही रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (17 से 23 अगस्त, 2023) का मौसम दृष्टिकोण–इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदश में सामान्य के आस पास जबकि मध्य एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सामान्य से कम वर्षा होने की संभावना है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में तापमान सामान्य के आस पास बने रहने जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सामान्य से अधिक रहने की संभावना है।

01 जून से 10 अगस्त, 2023 तक प्रदेश में मानसून ऋतु के दौरान औसत वर्षा 430.9 मिमी के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 379.2 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य वर्षा का 88 प्रतिशत है। प्रदेश के सभी 75 जनपदों में से 06 जनपदों (कन्नौज, एटा, मुजफफरनगर, बिजनौर, मेरठ, हमीरपुर) में अत्यधिक वर्षा जबकि 10 जनपदों में अधिक वर्षा, 22 जनपदों में सामान्य वर्षा, 31 जनपदों में न्यून वर्षा एवं 06 जनपदों में अतिन्यून वर्षा (पीलीभीत, चंदौली, मिर्जापुर, भदोही, कुशीनगर, मऊ) प्राप्त हुई है। सबसे अधिक वर्षा बिजनौर में 896.4 मि.मी. दर्ज हुई जो सामान्य से 64 प्रतिशत अधिक है। सबसे कम वर्षा कौशाम्बी में 131 मि.मी. दर्ज हुई जो सामान्य से 59 प्रतिशत कम है। प्रदेश के सभी अंचलों में अधिकतम आर्द्रता 80 से 95 प्रतिशत न्यूनतम आर्द्रता 60 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त खरीफ फसलों के आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 08 अगस्त, 2023 तक कुल लक्ष्य 96.20 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 93.14 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 97 प्रतिशत है। सुगंधित धान का लक्ष्य 8.62 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 9.42 लाख हेक्टेयर की पूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 109 प्रतिशत है। संकर धान के लक्ष्य 15.88 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 14.99 लाख हेक्टेयर में पूर्ति हो चुकी है, जो लक्ष्य का 94 प्रतिशत है। मक्का की बुआई के लक्ष्य 8 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 7.42 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है, जो लक्ष्य का 93 प्रतिशत है। ज्वार के लक्ष्य 2.18 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 2.22 लाख हेक्टेयर की पूर्ति की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 102 प्रतिशत है। बाजरा के लक्ष्य 10.10 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 9.29 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 92 प्रतिशत है। उर्द के लक्ष्य 7.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 6.17 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 85 प्रतिशत है। मूंग के लक्ष्य 0.40 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.44 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 111 प्रतिशत है। अरहर के लक्ष्य 3.60 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.44 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 95 प्रतिशत है। तिल के लक्ष्य 4.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.50 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई है, जो लक्ष्य का 82 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- **श्रीअन्न खेती को एवं इसके मूल्य संवर्धित उत्पादों को बढ़ावा दिया जाय।**
- **प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाय।**
- **कृषि रसायनों का प्रयोग वैज्ञानिक सलाह पर ही संस्तुति अनुरूप किया जाय।**
- **धान के खेत में नमी बनाये रखें। जिन क्षेत्रों में वर्षा की सम्भावनाएँ कम हैं वहाँ खेत में दरार दिखाई देने से पूर्व ही आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।**
- **धान वाले क्षेत्रों में जहां पर वर्षा सामान्य से काफी कम हुई हो वहां धान की फसल के स्थान पर सीमित सिंचाई उपलब्धता की दशा में कम समय में तैयार होने वाली बाजरा की संकुल प्रजातियां तथा उर्द/मूंग/तिल की बुआई प्राथमिकता के आधार पर किया जाय। यदि संभव हो तो बाजरे की फसल में मूंग/उर्द एवं लोबिया की सहफसली खेती की जाय जिससे जोखिम की संभावना कम रहे।**
- **दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जल भराव न होने दें, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।**
- **कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश-प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग कृषि रक्षा इकाई व कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह पर करें।**
- **खेतों मे मेड़बन्दी करके नमी को संरक्षित करें तथा तालाबों, पोखरों एवं झीलों में संरक्षित वर्षा जल को फसलों की क्रान्तिक वृद्धि की दशाओं में सिंचित करने के लिये उपयोग में लायें।**
- **फसलों द्वारा जल हानि को कम करने के लिये ज्वार, मक्का तथा गन्ने की पुरानी पत्तियों को पौधों से अलग कर उन्हें पंक्तियों के बीच मल्च (पलवार) के रूप में प्रयोग करें।**
- **संबंधित विभागों को निर्देशित किया जाय कि नहरों/नलकूपों की नालियों को ठीक दशा में रखे, जिससे आवश्यकतानुसार सिंचाई उपलब्ध कराई जा सकें।**
- **बुन्देलखण्ड में संकेन (रेज्ड)-बेड विधि से दलहनी एवं तिल व मूंगफली की सह-फसली खेती को अपनाया जाय।**
- **धान की ''डबल रोपाई या सण्डा प्लाटिंग'' हेतु दूसरी रोपाई पुनः पहले रोपे गये धान के 03 सप्ताह बाद 10 x 10 से.मी. की दूरी पर करें।**
- **रोपाई के बाद जो पौधे नष्ट गए हों उनके स्थान पर दूसरे पौधों को तुरन्त लगा दें ताकि प्रति इकाई पौधों की संख्या कम न होने पाये।**
- **खरीफ प्याज की पौध की रोपाई कृषि विज्ञान केन्द्रों की सलाह से करें।**
- **धान के खेतों में, वर्षा वाले क्षेत्रों में अजोला का प्रयोग करें जिससे नमी संरक्षण एवं पौधों को पोषण प्राप्त हो।**
- **वृक्षारोपण अभियान में फलदार वृक्षों का रोपण करें।**

धान की खेती

- पूर्वी उ.प्र. में अगस्त के प्रथम पक्ष में सुगंधित धान की किस्मों की रोपाई करें जिससे दाने की गुणवत्ता व सुगन्ध का विकास अच्छी तरह से हो सके।
- बासमती प्रजातियों में लगने वाले बकानी रोग से प्रभावित पौधों को उखाड़कर जमीन में दबा दें एवं बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम के 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से खड़ी फसल में छिड़काव करें।
- धान की सीधी बुवाई हेतु पलेवा करके ड्रम सीडर से शीघ्र पकने वाली किस्मों (100 से 120 दिन) की 50 से 55 कि.ग्रा. प्रति हे. बीज की दर से बुवाई करें।
- रोपित धान में यदि खैरा रोग लगा है तो रोग नियंत्रण के लिये फसल पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने के साथ 1000 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
- धान की फसल में जड़ की सूड़ी से 5 प्रतिशत प्रकोपित पौधे होने की दशा में तथा दीमक का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 2.5 ली./हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।
- तना बेधक कीट नियंत्रण हेतु नारियल की रस्सी को फसल के ऊपर सटाकर कई बार खींचें। अधिक प्रकोप होने की दशा में कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी. 16 से 18 किग्रा/हे. की दर से बुरकाव करें।
- धान की रोपाई के 20 से 25 दिन पर खरपतवार नियंत्रण हेतु विस्पाईरी बैक सोडियम रसायन का 250 मि.ली. प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- मक्के की फसल अधिक पानी के प्रति संवेदनशील है अतः खेत में अधिक पानी की दशा में जल निकासी की व्यवस्था करें।

- मक्का की बुवाई के 45–50 दिन बाद (सिल्किंग स्टेज) नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा की एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- मक्का में तना छेदक के 10 मृत गोभ होने पर कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 1.50 ली. का प्रति हे. बुरकाव/500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

श्रीअन्न की खेती

- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बाजरा की संकुल किस्मों घनशक्ति, डब्लू.सी.सी.–75, आई.सी.एम.बी.–155, आई.सी.टी.पी.–8203, राज–171 तथा न.दे.पफ.बी.–3 तथा संकर किस्मों 86 एम 84, पूसा–322, आई.सी.एम.एच.–451 तथा पूसा–23 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।

मूंग की खेती

- मूंग की किस्मों यथा आजाद मूंग–1, पूसा–1431, मेहा 99–125, एम.एच.–2.15, टी.एम.–9937, मालवीय, जनकल्याणी, मालवीय, जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, मालवीय ज्योति, पंत मूंग 4, नरेन्द्र मूंग–1, पी.डी.एम.–11, आशा, विराट एवं शिखा की बुवाई करें। बीज का उपचार मूंग के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से अवश्य करें।

उर्द की खेती

- उर्द की किस्मों यथा शेखर–1, शेखर–2, शेखर–3, आई.पी.यू.–94–1, नरेन्द्र उर्द–1, पंत उर्द–9, पंत उर्द–8, आजाद–3, डब्लू.बी. यू.–108, पंत उर्द–31, आई.पी.यू.–2–43, तथा आई.पी.यू.– 13–1 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें। बीज का उपचार उर्द के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से अवश्य करें।

तिल की खेती

- रोएंदार सूँड़ी (विहार हेयरी कैटर पिलर) का प्रकोप होने पर प्रारम्भिक अवस्था में अण्ड समूह/सूँड़ियों को पत्तियों सहित तोड़कर केरोसिन युक्त पानी में डालकर नष्ट कर दें अथवा क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.5 लीटर 1000 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

मूँगफली की खेती

- सफेद गिडार से बचाव हेतु लाइट ट्रैप का प्रयोग करें।
- जड़ सड़न में नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 63 प्रतिशत+कार्बेन्डाजिम 12 प्रतिशत डब्लू.पी.जी. की 2.5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर मात्रा की ड्रेचिंग करें।
- मूँगफली में खरपतवार नियंत्रण हेतु इमेजाथापर 750 मि.ली. प्रति हे. की दर से बुवाई के 25 से 30 दिन उपरांत प्रयोग करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने में लाल सड़न रोग के लक्षण दिखाई देने पर पूरे थान को जड़ सहित उखाड़कर नष्ट कर दें तथा उखाड़े गये स्थान पर 10 से 20 ग्राम ब्लीचिंग पाऊडर डाल दें। लाल सड़न रोग से प्रभावित खेत की मेड़बंदी करे दें जिससे संक्रमित खेत का पानी अन्य खेत में न जाय।
- बेधक कीटों के जैविक नियंत्रण के लिये 50 हजार ट्राइकोग्रामा अंड युक्त ट्राइकोकार्ड प्रति एकड़ लगायें। कार्ड टुकडों में काटकर पंत्तियों की निचली सतह पर नत्थी कर दें। यह कार्य 10 दिनों के अंतराल पर दोहरायें।
- अगस्त माह में गन्ने की लम्बवत् बढ़वार होती अतः पेड़ी की बंधाई करें।

सब्जियों की खेती

- सब्जियों में मिक्स क्रापिंग को बढ़ावा दिया जाय।
- पूर्व में रोपित बैंगन व मिर्च तथा गोभी के पौधों पर मिट्टी चढ़ायें तथा गोल बैंगन की तैयार पौध की रोपाई करें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा मैलाथियान 50 ई.सी. की 1 ली मात्रा 500 से 600 ली पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- बेहन हेतु गोभीवर्गीय सब्जियों, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाशीघ्र करें।
- अदरक के कंद सड़न रोग से बचाव हेतु जल निकास का उचित प्रबंध करें तथा प्रकोप होने पर चेस्टनट कम्पाउंड (11 भाग अमोनियम कार्बोनेट+2 ग्रा. कॉपर सल्फेट) का छिड़काव करें।
- अगेती बैंगन में तना एवं फलबेधक कीट का प्रकोप होने पर नीम आधारित कीटनाशक 3–5 मि.ली./ली. पानी में घोलकर अथवा मैलाथियान 50 ई.सी. का एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मिर्च में विषाणु रोग हेतु संवाहक कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई.सी. 01 मि.ली./ली. पानी अथवा इमिलाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत की 01 मि.ली. प्रति तीन लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

बागवानी

- आम की गुठली, अमरूद, कटहल, कागजी नींबू आदि के बीजों की बुवाई उठी हुई क्यारियों अथवा पॉलीथीन की थैलियों में करें।
- आम, अमरूद, लीची, आंवला, नींबू, चिरौंजी, लसोढ़ा, महुआ तथा अन्य फलदार पौधों का रोपण करें।

- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग एवं लीची व नींबू में गूँटी बाँधने का कार्य करें।
- **आम की** प्रजातियां यथा आम्रपाली, दशहरी, लंगड़ा, चौसा, मल्लिका, गौरजीत, बम्बई हरा तथा रामकेला, **अमरूद की** प्रजातियों यथा इलाहाबादी सफेदा, सरदार, सुरखा व ललित, **आंवला की** प्रजातियों कृष्णा, कंचन, नरेन्द्र आंवला 7 व नरेन्द्र आंवला 10, **लीची की** किस्मों यथा शाही, कलकतिया, नींबू की प्रजातियां कागजी, पंत लेमन 1 तथा इंदौर सीडलेस, पपीता की प्रजातियों हनी ड्यू, पूसा नन्हा, पूसा डिलीसियस, पूसा, ड्वार्फ तथा पूसा मैजेस्टी, सूर्या, रेड लेडी की नर्सरी में बुवाई करें।
- आम के नवीन बाग लगाते समय परागण हेतु उपयुक्त किस्मों का 10 प्रतिशत रोपण अवश्य करें। दशहरी प्रजाति के साथ बाग में बम्बई ग्रीन, गौरजीत, लखनऊ सफेदा को परागण किस्म के रूप में रोपित करें।
- केले की ऊतक संवर्धित प्रजाति जी–9 की पौध का यथाशीघ्र रोपण करें।
- केले में फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें तथा केले की तलवार पुत्ती को छोड़ते हुये शेष पुत्तियों की कटाई करें।
- फलों की गुणवत्तायुक्त पौध हेतु उद्यान विभाग की पंजीकृत पौधशालाओं, कृषि विश्वविद्यालयों व कृषि विज्ञान केन्द्रों की पौधशालाओं तथा केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ से सम्पर्क करें।
- नींबू में कैंकर रोग से बचाव हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम अथवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 600 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

पशुपालन

- वर्तमान में खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण सभी पशुचिकित्सालयों में कराया जा रहा है। यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर निशुल्क उपलब्ध है। बड़े पशुओं में गलाघोटू की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी क्यू वैक्सीन से टीकाकरण करायें।
- लम्पी स्किन रोग (एलएसडी) एक विषाणु जनित रोग है, जिसकी रोकथाम हेतु पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण प्रोग्राम चलाया जा रहा है। सभी कृषक/पशु पालक अपने निकटतम पशु चिकित्सालय से सम्पर्क कर इसकी रोकथाम संबंधी उपाय एवं टीकाकरण की जानकारी ले सकते हैं।
- सभी पशुपालक/कृषक खरीफ चारा फसलों की उन्नतशील किस्म के बीज की बुवाई करें।
- सिंचाईयुक्त क्षेत्र में कम अवधि वाले चारा फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, लोबिया, मक्का, क्लस्टर बीन इत्यादि की बुवाई करें।
- अजोला की खेती को प्रदेश के पशुपालकों को बड़े पैमाने पर अपनाये जाने हेतु प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है। अजोला कम अवधि में तैयार हो जाती है जिसमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन होती है। कम अवधि/सूखा सहनशील तथा दोहरे प्रयोजन वाली चारा फसलों के बीजों के उपलब्धता के लिये कृषि विश्वविद्यालय एवं भारत सरकार के चारा अनुसंधान केन्द्र में उच्च गुणवत्ता वाले चारा बीजों की किस्म विकसित है जिसे कम अवधि में सूखा/बाढ़ जैसे आपातकाल में चारा उत्पादन हेतु प्रयोग किया जाय।
- बकरी पालन, भेड़ पालन, सूकर पालन एवं कुक्कुट पालन की तकनीकी जानकारी तथा इन सभी विषयों पर चल रही विभागीय योजनाओं के बारे मे सभी कृषक/पशुपालक अपने निकटतम मुख्य पशुचिकित्साधिकारी/ पशुचिकित्साधिकारी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.–1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- कार्प मछलियों की 50 मिमी. अथवा अधिक आकार की 10000 स्वस्थ्य अंगुलिकायें प्रति हे. की दर से संचय की जा सकती हैं।
- छः प्रजातियों के मिश्रित पालन में कतला 10 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत, मृगल 15 प्रतिशत, सिल्वर कार्प 20 प्रतिशत, ग्रास कार्प 10 प्रतिशत, कामन कार्प 15 प्रतिशत का संचय अनुपात उचित होता है।
- तालाब में यदि 4 प्रजातियों का पालन किया जाता है तो कतला 30 प्रतिशत, रोहू 25 प्रतिशत, नैन 20 प्रतिशत व कॉमन कार्प 25 प्रतिशत का संचय अनुपात उचित होता है।
- तीन प्रजातियों के पालन में कतला 40 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत व नैन 30 प्रतिशत का संचय अनुपात होना चाहिये।
- एक सप्ताह बाद जल हरा होना प्रारंभ हो जाता है जल का हल्का हरा होना मछली के आहार का सूचक है।
- यदि पानी का रंग गहरा नीला हो जाता है तो यह मछलियों के लिये हानिकारक है।
- तालाब में फाइटोप्लेटान, जूप्लेक्टान मछलियों के प्राकृतिक भोजन होते हैं जिनका उत्पादन कार्बनिक खाद व रासायनिक उर्वरक के प्रयोग फलस्वरूप होता है।
- पूरक आहार का प्रयोग तालाब में मछलियों के भार का 1 से 2 प्रतिशत प्रतिदिन के अनुसार करना चाहिये।
- तालाबों में बुझा चूना 250 किग्रा./हे. एवं गोबर की खाद 1 टन/हे. डलवा दें।
- निगम की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। अतः सभी मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज संचय करें और मत्स्य बीज का मॉग पत्र जनपद स्तर पर मत्स्य विभाग को कार्यालय में जमा कर दें।

रेशम पालन

- कृषकों द्वारा रोपित शहतूत एवं अर्जुन वृक्षारोपण में घास, खरपतवार की सफाई कर गुड़ाई का कार्य कर लें तथा एरी रेशम कीटपालन हेतु अरण्डी बीज की बुवाई करें। वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य कर लें।
- टसर रेशम कीटपालन हेतु साफ–सफाई का अधिक ध्यान दिया जाय तथा कीट के प्रथम मोल्ट के बाद जीवनसुधा औषधी का प्रयोग करना चाहिये।
- रेशम कीटपालन के इच्छुक कृषक अपने नजदीकी रेशम अधिकारी/प्रभारी से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर कीटपालन कार्य करें।
- शहतूत व अर्जुन के लगाये हुये नवीन पौधों की समुचित देखभाल कर आवश्यक नमी बनाये रखे।
- आगामी 15 अगस्त को होने वाले वृक्षारोपण से संबंधित समस्त तैयारियां पूर्ण कर लें।
- आगामी मानसून फसल के कीटपालन के समस्त तैयारियां पूर्व में कर लें। कीट पालन भवन एवं उपकरणों का दो प्रतिशत फार्मलीन के घोल का छिड़काव कर विशुद्धीकरण कर लिया जाय तथा विशुद्धीकरण उपरांत कीट पालन भवन को 24 घंटे के लिये एयरटाईट बंद रखें।

वानिकी

- बुंदेलखण्ड में चिरौजी, लसोढ़ा, शरीफा व खिरनी के पौधें लगायें जिनकी पौध कृषि विश्वविद्यालय, बांदा से प्राप्त की जा सकती है।
- पौधशाला में अंकुरण क्यारियॉ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई शीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर रख दें।
- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।
- पौधों को रोपण से पहले सावधानीपूर्वक पालीथीन से निकालें तथा पिण्डी को टूटने न दें उसके उपरांत ही रोपण करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 24 अगस्त, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

(संजय सिंह)
महानिदेशक 10/8/23

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
16. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
17. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
18. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
19. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।

20. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
21. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
22. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
23. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
24. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
25. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
27. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
28. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
29. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
30. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
31. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
32. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
33. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
34. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
35. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
36. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
38. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
39. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
40. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
41. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
42. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
43. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

10-08-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की नवीं बैठक दिनांक 10 अगस्त, 2023 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. श्री वी.के. शुक्ला, अपर गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश
5. श्री ए.के. बिश्नोई, संयुक्त कृषि निदेशक, धान्य फसलें, कृषि विभाग, उ.प्र.
6. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
7. डा. विजय बहादुर द्विवेदी, संयुक्त निदेशक शाकभाजी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
8. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
9. डा. एस. सी. शुक्ला, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
10. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
11. डा. अतुल कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ।
12. श्री अनिल सागर, उपनिदेशक (कृषि रक्षा), कृषि विभाग, लखनऊ
13. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
14. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,अयोध्या
15. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
16. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज
17. श्री सत्येन्द्र यादव, वरिष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
18. श्री आशुतोष कुमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
19. श्री नितेश सहाय, सहकारी पर्यवेक्षक, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।